INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 8 | SEPTEMBER– 2020

हिंदी कथा साहित्य में यशपाल की यथार्थवादी दृष्टि

डॉ. आनंद कुमार मिश्रा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौतम बुद्ध राजकीय महाविद्यालय,
दर्शन नगर, अयोध्या, (उ0प्र0)

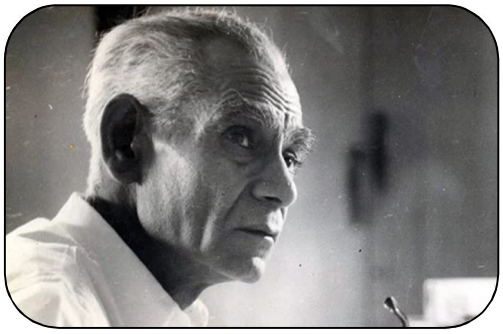

हिंदी साहित्य के प्रगतिवादी युग में यशपाल का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली माना जाता है। उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ, वर्ग-संघर्ष, नारी-स्वतंत्रता, मनोवैज्ञानिक जटिलता तथा क्रांतिकारी चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में यशपाल की कहानियों के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है, जिनमें यथार्थवाद, समाजवादी दृष्टिकोण, स्त्री-विमर्श, भाषा-शैली, कथानक संरचना तथा सामाजिक प्रतिबद्धता प्रमुख हैं। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि यशपाल की कहानियाँ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के सशक्त उपकरण भी हैं।

हिंदी कथा-साहित्य का विकास विभिन्न चरणों से होकर गुजरा है। भारतेन्दु युग से आरंभ होकर द्विवेदी युग और फिर प्रेमचंद युग में कथा-साहित्य ने सामाजिक यथार्थ को प्रमुखता दी। प्रेमचंद के बाद प्रगतिवादी आंदोलन ने साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की, जिसमें यशपाल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यशपाल केवल साहित्यकार नहीं थे, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन के सक्रिय क्रांतिकारी भी थे। उनके जीवन के अनुभवों ने उनकी लेखनी को वैचारिक धार प्रदान की। उनकी कहानियाँ समाज की विसंगतियों, अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध आवाज उठाती हैं। यशपाल-लखनवी

अन्दाज़ ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। ... लेखक की यह पुरानी आदत थी कि वह जब अकेला होता अथवा खाली होता तो अनेक प्रकार की कल्पनाएं करने लग जाता था क्योंकि वह एक लेखक है इसलिए कल्पना के आधार पर अपनी रचनाएँ करता है।

यशपाल का जन्म 3 दिसंबर, 1903 को पंजाब के फिरोजपुर छावनी में एक साधारण परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम श्रीमती प्रेमदेवी और पिता का नाम हीरालाल था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय स्कूल में हुई और बाद में उन्होंने लाहौर के नेशनल कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की, जहाँ वे भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के संपर्क में आए । विद्यार्थी जीवन से ही वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गए थे। उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई, जिसके कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा। यशपाल एक बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबंध, और आत्मकथा (सिंहावलोकन) जैसी विधाओं में निपुणता हासिल की। यशपाल के लेखन में यथार्थवाद (Realism) की झलक स्पष्ट दिखती है। उन्होंने समाज की कुरीतियों, आर्थिक विषमता और राजनीतिक पाखंड पर निर्भीकता से लिखा है। उनकी भाषा सहज और स्वाभाविक है, जिसमें उन्होंने उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का भी उदारता से प्रयोग किया है । और वे प्रारंभ से ही क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े रहे। वे हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य रहे और भगत सिंह के सहयोगी भी थे। जेल जीवन और स्वतंत्रता संघर्ष के अनुभवों ने उनकी विचारधारा को समाजवादी दिशा दी।

उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं— **उपन्यास:** झूठा सच (भारत-पाक विभाजन पर आधारित), दादा कॉमरेड, दिव्या, देशद्रोही, अमिता, और मेरी तेरी उसकी बात।

कहानी संग्रह: ज्ञानदान, तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान, भस्मावृत चिनगारी, वो दुनिया और चित्र का शीर्षक।

आत्मकथा: सिंहावलोकन (तीन खंडों में)।

साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजा गया:

साहित्य अकादमी पुरस्कार: उनके उपन्यास 'मेरी तेरी उसकी बात' के लिए।

पद्म भूषण: भारत सरकार द्वारा। **सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार**।

इन रचनाओं में सामाजिक यथार्थ और वैचारिक प्रतिबद्धता का समन्वय देखने को मिलता है। यशपाल की कहानियों का सबसे प्रमुख गुण उनका यथार्थवाद है। वे जीवन की कठोर सच्चाइयों

को बिना किसी अलंकरण के प्रस्तुत करते हैं। उनका यथार्थवाद बहुआयामी है- सामाजिक यथार्थ, आर्थिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक यथार्थ । वे समाज की विसंगतियों जैसे गरीबी, बेरोजगारी, शोषण और नैतिक पतन को उजागर करते हैं। यशपाल की कहानियों में वर्ग-संघर्ष की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। वे पूंजीवादी व्यवस्था की आलोचना करते हैं और श्रमिक वर्ग के पक्ष में खड़े होते हैं। उनकी विचारधारा में निम्न तत्व प्रमुख हैं - वर्ग-संघर्ष की अवधारणा, समानता का समर्थन, शोषण के विरुद्ध संघर्ष । उनकी कहानियाँ समाजवादी परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं।

यशपाल की कहानियों का एक महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य स्त्री-चेतना है। उन्होंने स्त्री को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में स्त्री की सामाजिक स्थिति का यथार्थ चित्रण, विवाह संस्था की आलोचना, स्त्री की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का समर्थन । वे पितृसत्तात्मक समाज की आलोचना करते हैं और स्त्री के अधिकारों की वकालत करते हैं। यशपाल के कथा साहित्य में स्त्री रूढ़िवादी बेड़ियों को तोड़कर आर्थिक आत्मनिर्भरता, यौन स्वतंत्रता और व्यक्तित्व विकास की ओर अग्रसर एक प्रगतिशील रूप में चित्रित है। वे नारी को भोग्या नहीं, बल्कि पुरुष के समान एक स्वतंत्र इकाई मानते हैं, जो 'दिव्या' जैसी कृतियों में देह के स्वामित्व और 'झूठा सच' में साहसी आत्मनिर्भरता के माध्यम से सामाजिक बंधनों को चुनौती देती है। यशपाल की नायिकाएं (जैसे 'दिव्या') रूढ़ियों को तोड़कर स्वयं अपना मार्ग चुनती हैं, जहाँ आत्मसम्मान के लिए विवाह जैसी संस्था से बाहर निकलना भी स्वीकार्य है। वे नारी की कामेच्छा और यौन समस्याओं को संकोच के बिना प्रस्तुत करते हैं, जिसे स्त्री के व्यक्तित्व का स्वाभाविक हिस्सा मानते हैं। यशपाल नारी के प्रति सहानुभूति रखते हैं और उसे त्याग, सेवा के साथ-साथ साहस का प्रतीक भी मानते हैं। वे विधवा पुनर्विवाह, वेश्या समस्या और मध्यवर्गीय कुंठाओं पर खुलकर प्रहार करते हैं। दिव्या: यहाँ नायिका देह-स्वामित्व (self-ownership) के लिए वैश्यावृत्ति (गणिका) के रूप में एक स्वतंत्र और सम्मानीय जीवन को चुनती है। झूठा सच: इस उपन्यास में तारा जैसी महिला पात्रों के माध्यम से विभाजन की त्रासदी, शोषण और फिर आत्मनिर्भरता (सरकारी नौकरी में उच्च पद) को दिखाया गया है। "तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूँ" और "पिंजरे की उड़ान" में नारी की आकांक्षाओं और मानसिक कुंठाओं का सूक्ष्म चित्रण है। संक्षेप में, यशपाल की दृष्टि में नारी केवल मातृत्व या सेवा की मूरत नहीं, बल्कि एक विवेकशील और स्वतंत्र इकाई है, जो अपने

अधिकारों के लिए समाज से संघर्ष करने में सक्षम है। यशपाल की कहानियाँ केवल घटनाओं का विवरण नहीं देतीं, बल्कि पात्रों के मनोभावों और आंतरिक संघर्षों को भी उजागर करती हैं। उनके पात्र द्वंद्वग्रस्त होते हैं, सामाजिक दबाव से प्रभावित होते हैं, आत्मसंघर्ष का अनुभव करते हैं । यह मनोवैज्ञानिक गहराई उनकी कहानियों को अधिक प्रभावशाली बनाती है। यशपाल ने समाज की कुरीतियों और पाखंड पर तीखा व्यंग्य किया है। उनके व्यंग्य के प्रमुख लक्ष्य हैं धार्मिक पाखंड,सामाजिक रूढ़ियाँ, राजनीतिक भ्रष्टाचार । उनका व्यंग्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार का माध्यम है।

यशपाल की भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली है। बोलचाल की भाषा का प्रयोग, संवादात्मक शैली, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों का मिश्रण, उनकी भाषा में सहजता और प्रवाह है, जिससे पाठक आसानी से जुड़ जाता है। उनकी भाषा में सामाजिक-राजनीतिक विषमता, रूढ़ियों पर कड़ा प्रहार (व्यंग्य) और मार्क्सवादी दृष्टिकोण की झलक मिलती है। यशपाल ने आम जनता की समझ में आने वाली बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और मनोविश्लेषणात्मक शैली से युक्त है, जो घटनाओं को सजीव बना देती है। तत्सम (शुद्ध हिंदी) शब्दों के साथ-साथ तद्भव और उर्दू-अंग्रेजी के व्यावहारिक शब्दों का मिश्रण है। सामाजिक रूढ़ियों और राजनीतिक पाखंड के खिलाफ उनकी भाषा में तीखा व्यंग्य और आक्रोश दिखाई देता है। जटिल विषयों को भी सरल और सीधे ढंग से प्रस्तुत करने में वे माहिर थे। संक्षेप में, यशपाल की भाषा उनके क्रांतिकारी और मार्क्सवादी विचारों को पाठकों तक बेबाकी से पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है।

यशपाल की कहानियों में कथानक जीवन से लिया गया होता है और उसमें स्वाभाविकता होती है।घटनाओं की वास्तविकता, कथानक में गति, अंत में विचारोत्तेजक निष्कर्ष होते हैं । यशपाल की कहानियाँ सामाजिक परिवर्तन की भावना से प्रेरित हैं। वे साहित्य को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज सुधार का माध्यम मानते हैं। यशपाल ने विशेष रूप से शहरी मध्यमवर्गीय जीवन का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में बेरोजगारी, आर्थिक संघर्ष, पारिवारिक तनाव, नैतिक द्वंद्व का यथार्थ चित्रण मिलता है। यशपाल का क्रांतिकारी जीवन उनकी कहानियों में स्पष्ट दिखाई देता है। वे अन्याय के विरुद्ध विद्रोह और सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्ष का संदेश देते हैं।

प्रमुख कहानियों का विश्लेषण

'पिंजरे की उड़ान'-यह कहानी स्त्री की स्वतंत्रता और सामाजिक बंधनों के विरुद्ध संघर्ष को दर्शाती है। 'ज्ञानदान'- इस कहानी में शिक्षा और सामाजिक असमानता का चित्रण है। 'फूलों का कुर्ता'- यह कहानी मध्यमवर्गीय जीवन की विडंबनाओं को प्रस्तुत करती है। 'उत्तराधिकारी'- इसमें संपत्ति, संबंध और सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है।

यशपाल के उपन्यासों का विस्तृत विश्लेषण:

प्रगतिशील और मार्क्सवादी विचारधारा: यशपाल के उपन्यासों (जैसे 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'पार्टी कामरेड') में मार्क्सवादी विचारधारा का गहरा प्रभाव है। वे पूँजीवादी व्यवस्था की आलोचना करते हैं और शोषित वर्ग के संघर्ष को स्वर देते हैं।

यथार्थवादी चित्रण (झूठा सच): उनके उपन्यास 'झूठा सच' को विभाजन के दंश, सांप्रदायिक हिंसा, और शरणार्थियों के पुनर्वास पर लिखा गया सबसे विश्वसनीय दस्तावेज़ माना जाता है, जिसमें यथार्थ की निर्भीक अभिव्यक्ति है।

नारी चेतना और स्वतंत्रता: 'दिव्या' के माध्यम से यशपाल ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व को स्थापित किया है। वे स्त्री-पुरुष संबंधों को पारंपरिक नैतिक बेड़ियों से मुक्त कर मानवीय दृष्टिकोण से देखते हैं।

सामाजिक और राजनीतिक विद्रोही स्वर: उनके उपन्यासों में सामंती रूढ़ियों, धार्मिक ढोंग और झूठी नैतिकता पर तीखा व्यंग्य है। 'अमिता' में गांधीवादी विचारधारा से असहमति और शांति का संदेश है।

मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी दृष्टिकोण: यशपाल ने फ्रायड और एडलर के सिद्धांतों को अपनाते हुए 'बारह घंटे' जैसे उपन्यासों में पात्रों के मानसिक द्वंद को चित्रित किया है।

प्रेमचंद (गांधीवादी यथार्थवाद) और यशपाल (मार्क्सवादी/वैज्ञानिक यथार्थवाद) हिन्दी साहित्य के दो कालजयी स्तंभ हैं। जहाँ प्रेमचंद ग्रामीण परिवेश, नैतिकता और आदर्शोन्मुख यथार्थ पर केंद्रित थे, वहीं यशपाल शहरी मध्यमवर्ग, क्रांतिकारी विचारधारा, यौन चेतना और मार्क्सवादी द्वंद्वात्मकता के माध्यम से सामाजिक संरचना पर तीखा प्रहार करते थे। प्रेमचंद का साहित्य 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' से शुरू होकर गोदान तक 'प्रगतिशील' हो गया, जबकि यशपाल

मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा से प्रभावित थे और उन्होंने गांधीवाद की आलोचना भी की। प्रेमचंद की रचनाएँ (जैसे गोदान, गबन) मुख्य रूप से ग्रामीण भारत और निम्न-मध्यम वर्ग पर केंद्रित थीं, जबकि यशपाल की रचनाएँ (जैसे झूठा सच) शहरी और नगरीय समाज के संघर्षों को दर्शाती हैं। प्रेमचंद नारी को श्रद्धा व आदर्श का प्रतीक मानते थे, वहीं यशपाल स्त्री शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और नारी को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व (जैसे 'दिव्या' उपन्यास) के रूप में प्रतिष्ठित करने के पक्षधर थे। प्रेमचंद ने सामाजिक रूढ़ियों और जमींदारी प्रथा पर प्रहार किया। यशपाल ने सामाजिक के साथ-साथ राजनीतिक पाखंड, विभाजन (झूठा सच) और क्रांतिकारी चेतना को अपने साहित्य का विषय बनाया। यशपाल को अक्सर 'गरीबों का प्रेमचंद' भी कहा जाता है और वे प्रेमचंद की परंपरा के ही आगे के लेखक माने जाते हैं। दोनों ही रचनाकारों ने अपनी कला का उपयोग सामाजिक सुधार और क्रांति के लिए किया, और वे हिन्दी कथा साहित्य में मेरुदंड के समान हैं। आज के समय में भी यशपाल की कहानियाँ प्रासंगिक हैं क्योंकि सामाजिक असमानता अभी भी मौजूद है । स्त्री-विमर्श आज भी महत्वपूर्ण है । वर्ग-संघर्ष की समस्या अभी भी बनी हुई है ।

निष्कर्ष (Conclusion)

यशपाल की कहानियाँ हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उन्होंने कथा-साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया और उसे वैचारिक गहराई प्रदान की। उनकी कहानियों का वैशिष्ट्य उनके यथार्थवाद, समाजवादी दृष्टिकोण, स्त्री-चेतना, मनोवैज्ञानिक गहराई और सरल भाषा में निहित है। इस प्रकार, यशपाल की कहानियाँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सामाजिक चेतना के निर्माण में भी उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यशपाल प्रगतिशील आंदोलन की उपज थे। वह हिंदी के उस प्रमुख साहित्यिक समूह का प्रतिनिधित्व करते थे जो समाजवादी यथार्थवाद और उद्देश्यपरक कला की अवधारना के प्रति समर्पित थे। उन्होंने भारत की सामाजिक-राजनीतिक अवसंरचना को मार्क्सवाद-लेनिनवाद के चश्मे से समझने का प्रयास किया था।

सहायक पुस्तकें:

1- यशपाल, पिंजरे की उड़ान, ज्ञानदान, फूलों का कुर्ता
2- यशपाल, उत्तराधिकारी
3- यशपाल, झूठा सच, दिव्या उपन्यास
4- रामविलास शर्मा – प्रगतिवाद और हिंदी साहित्य
5- नामवर सिंह – कहानी: नई कहानी
6- नागेन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास
7- हजारीप्रसाद द्विवेदी – हिंदी साहित्य की भूमिका
8- विश्वनाथ त्रिपाठी – हिंदी आलोचना
9- अज्ञेय – आधुनिक हिंदी साहित्य